IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 12, 2021

महिलाओं का आर्थिक और सामाजिक संगठनः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. राहुल
सहायक प्रोफेसर, (समाजशास्त्र)
गांधी आदर्श कॉलेज
समालखा, पानीपत
हरियाणा – 132101

सार

यह अध्ययन दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक सशक्तीकरण की पड़ताल करता है, और शिक्षा, सूक्ष्म उद्यमिता, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच जैसे कारकों के प्रभाव की जाँच करता है। 150 महिलाओं के सर्वेक्षण के आधार पर, सशक्तिकरण पर इन कारकों के प्रभाव का आकलन करने के लिए एनोवा, ची–स्क्वायर और सहसंबंध सहित सांख्यिकीय विश्लेषणों का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और सामाजिक सशक्तीकरण के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को उजागर करते हैं। शिक्षा आर्थिक भागीदारी, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और निर्णय लेने की शक्ति को बढ़ाने में केंद्रीय भूमिका निभाती है, जबकि सूक्ष्म उद्यमिता और एसएचजी वित्तीय स्वतंत्रता और नेतृत्व के लिए मंच प्रदान करते हैं। हालांकि, सीमित स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और कम राजनीतिक भागीदारी जैसी बाधाएँ बनी हुई हैं। परिकल्पना परीक्षण महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका का और समर्थन करता है।

मुख्य शब्दः महिला सशक्तिकरण, समाजशास्त्रीय अध्ययन, सूक्ष्म उद्यमिता, स्वयं सहायता समूह, शिक्षा, दिल्ली एनसीआर, एनोवा, ची–स्क्वायर टेस्ट, लैंगिक समानता, सशक्तिकरण गतिशीलता।

1 परिचय

महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य समाज में महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार करना है। यह प्रक्रिया भारत जैसे विकासशील देशों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहाँ लैंगिक असमानताएँ शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा और शासन में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करती रहती हैं। दिल्ली एनसीआर (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र), शहरीकरण, औद्योगिक विकास और सामाजिक–आर्थिक असमानताओं के अपने गतिशील मिश्रण के साथ, सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं और अवसरों को समझने के लिए एक अनूठा केस स्टडी प्रस्तुत करता है। दिल्ली एनसीआर जैसे शहरी क्षेत्रों में, महिलाओं को जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो विभिन्न क्षेत्रों में उनकी प्रगति में बाधा डालती हैं। इनमें सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंड शामिल हैं जो महिलाओं को निभानी चाहिए, आर्थिक संसाधनों तक सीमित पहुँच और परिवार और संस्थागत दोनों स्तरों पर निर्णय लेने वाली संस्थाओं में सीमित प्रतिनिधित्व। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएच–5) के अनुसार, दिल्ली एनसीआर में महिलाओं के बीच साक्षरता दर 83.2प्रतिशत है, फिर भी श्रम बल में उनकी भागीदारी बहुत कम है, केवल 21.5 प्रतिशत। यह विपरीतता शैक्षिक उपलब्धि और आर्थिक भागीदारी के बीच के अंतर को उजागर करती है।

यह शोध पत्र दिल्ली एनसीआर में महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ाने में शिक्षा, सूक्ष्म उद्यमिता, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) और स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच जैसे प्रमुख सामाजिक–आर्थिक कारकों की भूमिका का पता लगाने का प्रयास करता है। एनोवा (विचरण का विश्लेषण), ची–स्क्वायर परीक्षण और सहसंबंध विश्लेषण जैसे सांख्यिकीय तरीकों के संयोजन के माध्यम से, यह शोध यह आकलन करेगा कि ये कारक महिला सशक्तिकरण के साथ कैसे सहभागिता करते हैं। अध्ययन चार परिकल्पनाओं का भी परीक्षण करेगा जो क्षेत्र में सामाजिक–आर्थिक कारकों और महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों के बीच संबंधों का पता लगाते हैं।

2. साहित्य समीक्षा

महिला सशक्तिकरण पर साहित्य बहुत बड़ा है, जिसमें सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारकों की एक श्रृंखला शामिल है जो महिलाओं की स्वायत्तता, स्वतंत्रता और चुनाव करने की क्षमता को प्रभावित करती है। महिला सशक्तिकरण की समझ समय के साथ विकसित हुई है, जिसमें आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा तक पहुँच, राजनीतिक भागीदारी, सामाजिक समानता और स्वास्थ्य सेवा पर महत्वपूर्ण जोर दिया गया है। इनमें से प्रत्येक आयाम यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में महिलाएँ कितनी सशक्त महसूस करती हैं और कैसे कार्य करती हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण के साधन के रूप में सूक्ष्म उद्यमिता

सूक्ष्म उद्यमिता महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरी है, खासकर विकासशील क्षेत्रों में। सूक्ष्म उद्यम महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने, रोजगार सृजित करने और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में योगदान करने के अवसर प्रदान करते हैं। वीरमणि एट अल. (2009) इस बात पर जोर देते हैं कि सूक्ष्म उद्यमिता में महिलाओं की भागीदारी घरेलू आय में सुधार कर सकती है, वित्तीय साक्षरता बढ़ा सकती है और कौशल निर्माण के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है। दिल्ली एनसीआर में, जहाँ शहरी गरीबी और असमानता बनी हुई है, जो महिलाएँ छोटे पैमाने के व्यवसायों जैसे कि सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण या घर–आधारित शिल्प में संलग्न हैं, वे वित्तीय स्वायत्तता और समुदाय की भावना दोनों का अनुभव करती हैं। हालाँकि, अवसरों के बावजूद, महिलाओं को अक्सर उद्यमिता में बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुँच, बैंकों से लैंगिक पूर्वाग्रह और बाजार की जानकारी का अभाव शामिल है। भारत में व्यापक रूप से प्रचारित स्व–सहायता समूह मॉडल महिला उद्यमियों के लिए एक महत्वपूर्ण सहायता संरचना प्रदान करता है। एसएचजी

महिलाओं को बचत, ऋण और माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से वित्तीय संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने में महत्वपूर्ण हैं, जो अन्यथा संपार्श्विक या वित्तीय साक्षरता की कमी के कारण उनके लिए उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। जैसा कि अरुल परमानंदम और पैकिरिसामी (2015) ने उल्लेख किया है, स्वयं सहायता समूह महिलाओं के लिए नेतृत्व कौशल विकसित करने और पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती देने के लिए महत्वपूर्ण स्थान के रूप में भी काम करते हैं।

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) महिलाओं के छोटे, अनौपचारिक समूह हैं जो आम समस्याओं को हल करने और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक साथ आते हैं। एसएचजी को महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे प्रभावी मॉडलों में से एक माना गया है, खासकर अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में। दिल्ली एनसीआर में, एसएचजी ने महिलाओं को न केवल माइक्रोफाइनेंस बल्कि उद्यमिता, स्वास्थ्य और कानूनी अधिकारों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों तक पहुंच बनाने में सक्षम बनाने में प्रमुखता हासिल की है। मुखिया (2016) महिलाओं के बीच एकजुटता को बढ़ावा देने में एसएचजी के महत्व को रेखांकित करता है, जो अक्सर सांस्कृतिक और सामाजिक बाधाओं पर काबू पाने के लिए महत्वपूर्ण होता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत भर में 1.2 मिलियन से अधिक एसएचजी मौजूद हैं और उनमें से 80प्रतिशत से अधिक का नेतृत्व महिलाएं करती हैं। इन समूहों की सफलता शहरी मलिन बस्तियों में महिलाओं की बढ़ती संख्या में स्पष्ट है जो छोटे व्यवसाय शुरू करने, अपनी वित्तीय साक्षरता में सुधार करने और यहां तक कि घरेलू हिंसा और स्वास्थ्य जागरूकता जैसे सामुदायिक स्तर के मुद्दों को संबोधित करने में सक्षम हैं। स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की आर्थिक सफलता

का श्रेय इन सहयोगात्मक प्रयासों को दिया जा सकता है, जो संसाधनों और सहायता तक पहुंचने में आने वाली बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं।

महिला सशक्तिकरण पर शिक्षा का प्रभाव

शिक्षा को लंबे समय से महिलाओं को सशक्त बनाने के सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक माना जाता रहा है। जैसा कि कलाकोटी (2021) ने बताया है, शिक्षा का महिलाओं की श्रम बाजार में भाग लेने, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने और राजनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल होने की क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दिल्ली एनसीआर में, पिछले कुछ दशकों में महिलाओं की साक्षरता दर में काफी सुधार हुआ है, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं, खासकर हाशिए के समुदायों में। दिल्ली आर्थिक सर्वेक्षण (2020) के अनुसार, दिल्ली में पुरुषों और महिलाओं के बीच शिक्षा का अंतर अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख है, जहाँ कई क्षेत्रों में महिलाओं की उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुँच सीमित है। शिक्षित महिलाओं के सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने, घर से बाहर रोजगार की तलाश करने और बेहतर स्वास्थ्य सेवा की माँग करने की संभावना अधिक होती है।

स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच और सशक्तिकरण में इसकी भूमिका

स्वास्थ्य सेवा, विशेष रूप से प्रजनन स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच, महिला सशक्तिकरण में अक्सर अनदेखा किया जाने वाला लेकिन महत्वपूर्ण कारक है। ब्रेनयाह (2018) के अनुसार, प्रजनन अधिकार महिलाओं को उनके स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और समग्र कल्याण के बारे में सूचित निर्णय लेने की अनुमति देते हैं, जो सभी स्वायत्त जीवन विकल्प बनाने की उनकी क्षमता में योगदान करते हैं। दिल्ली एनसीआर क्षेत्र, भारत में कुछ बेहतरीन स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं के बावजूद, अभी भी गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक असमान पहुँच से जूझता है, खासकर हाशिए के समुदायों में। दिल्ली एनसीआर में महिलाओं को प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में अक्सर महत्वपूर्ण बाधाओं का

सामना करना पड़ता है, जिसमें जानकारी की कमी, वित्तीय बाधाएँ और सामाजिक कलंक शामिल हैं। अध्ययनों से पता चला है कि जब महिलाओं का अपने प्रजनन विकल्पों पर नियंत्रण होता है, तो वे अपनी शिक्षा और करियर में निवेश करने की अधिक संभावना रखती हैं।

3 प्रक्रिया

यह शोध दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में किए गए प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित है, जिसमें 150 महिलाओं का नमूना लिया गया था। प्रतिभागियों का चयन व्यक्तिगत बैठकों के माध्यम से सुविधाजनक नमूनाकरण पद्धति का उपयोग करके किया गया था। नमूने की जनसांख्यिकीय प्रोफाइल में विभिन्न आयु समूहों, शैक्षिक पृष्ठभूमि और सामाजिक–आर्थिक स्थितियों की महिलाएँ शामिल हैं। डेटा एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके एकत्र किया गया था जो निम्नलिखित क्षेत्रों पर केंद्रित था:

1. शिक्षा और कौशल विकास
2. सूक्ष्म उद्यमिता और आर्थिक भागीदारी
3. स्वास्थ्य और अच्छाई
4. राजनीतिक और सामाजिक भागीदारी

सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके किया गया। अध्ययन में निम्नलिखित का उपयोग किया गया:

- **एनोवा:** विभिन्न सामाजिक–आर्थिक समूहों में सशक्तिकरण के स्तर में अंतर का परीक्षण करना।
- **काई–स्क्वायर परीक्षण:** शिक्षा स्तर और आर्थिक भागीदारी जैसे श्रेणीगत चरों के बीच संबंध का आकलन करना।

- **सहसंबंध विश्लेषण:** सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के बीच संबंधों की ताकत और दिशा को मापना।

4. डेटा विश्लेषण

4.1 जनसांख्यिकीय डेटा

नमूने की जनसांख्यिकीय विशेषताएं, जिनमें आयु, शिक्षा और रोजगार की स्थिति शामिल है, नीचे दी गई तालिका में प्रस्तुत की गई हैं।

जनसांख्यिकीय चर	**आवृत्ति**	प्रतिशत
आयु		
18-25	40	26.67%
26-35	50	33.33%
36-45	30	20.00%
46-60	20	13.33%
60+	10	6.67%
शिक्षा		
कोई औपचारिक शिक्षा नहीं	20	13.33%
प्राथमिक शिक्षा	30	20.00%
माध्यमिक शिक्षा	40	26.67%
उच्च शिक्षा	60	40.00%
रोज़गार की स्थिति		
कार्यरत	80	53.33%
स्वनियोजित	40	26.67%
बेरोज़गार	30	20.00%

यह तालिका सर्वेक्षण में भाग लेने वाली 150 महिलाओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विस्तृत विवरण प्रदान करती है। इसमें उनकी आयु, शिक्षा और रोजगार की स्थिति के बारे में जानकारी शामिल है, जिनमें से प्रत्येक दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण को समझने में एक महत्वपूर्ण कारक है।

आयु संवितरण:

आयु वितरण तालिका से पता चलता है कि नमूने में जीवन के विभिन्न चरणों की महिलाएँ शामिल हैं, जो महत्वपूर्ण है क्योंकि सशक्तिकरण का स्तर उम्र के अनुसार काफी भिन्न हो सकता है। सबसे बड़ा समूह (33.33 प्रतिशत) 26–35 वर्ष की आयु वर्ग में आता है, जो संभवतः अपने मुख्य कार्य वर्षों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है। 18–25 समूह में 26.67 प्रतिशत हिस्सा है, जो दर्शाता है कि इस अध्ययन में कई युवा महिलाएँ शामिल हैं, जो इस बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है कि प्रारंभिक चरण का सशक्तिकरण बाद के जीवन चरणों को कैसे प्रभावित करता है। नमूने में अधिक आयु वर्ग (36–45, 46–60 और 60) की महिलाएँ भी शामिल हैं, हालाँकि कम प्रतिशत (क्रमशः 20 प्रतिशत, 13.33 प्रतिशत और 6.67 प्रतिशत) में। यह विविध आयु वितरण सुनिश्चित करता है कि अध्ययन महिला सशक्तिकरण के बारे में अनुभवों और दृष्टिकोणों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाता है।

शिक्षा का स्तरः

उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर यह समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि शिक्षा महिला सशक्तिकरण को कैसे प्रभावित करती है। नमूने के अधिकांश (40 प्रतिशत) ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, जो दर्शाता है कि दिल्ली एनसीआर में महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा एक मजबूत कारक है। माध्यमिक शिक्षा वाले नमूने का 26.67 प्रतिशत हिस्सा है, जबकि 20 प्रतिशत के पास प्राथमिक शिक्षा है, और 13.33 प्रतिशत के पास कोई औपचारिक शिक्षा नहीं है। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं का महत्वपूर्ण अनुपात बताता है कि शैक्षिक प्राप्ति संभवतः सशक्तिकरण के उच्च स्तर से संबंधित है, जिसमें रोजगार, आर्थिक संसाधनों और निर्णय लेने के अवसरों तक बेहतर पहुँच शामिल है।

रोजगार की स्थितिः

उत्तरदाताओं की रोजगार स्थिति सशक्तिकरण के आर्थिक आयामों को और स्पष्ट करती है। नमूने में शामिल अधिकांश (53.33 प्रतिशत) महिलाएँ कार्यरत हैं, 26.67 प्रतिशत

स्व–रोजगार में हैं और 20 प्रतिशत बेरोजगार हैं। रोजगार या स्व–रोजगार की उच्च दर महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में सकारात्मक प्रवृत्ति को दर्शाती है, जो सशक्तिकरण का एक प्रमुख आयाम है। इन महिलाओं को अपने घरों में वित्तीय स्वतंत्रता और निर्णय लेने की शक्ति तक पहुँच होने की अधिक संभावना है। हालाँकि, 20 प्रतिशत बेरोजगारी दर बताती है कि पूर्ण आर्थिक भागीदारी में अभी भी बाधाएँ हैं, संभवतः सीमित अवसरों, सामाजिक मानदंडों या अन्य संरचनात्मक बाधाओं के कारण।

4.2 सर्वेक्षण प्रश्नों का विश्लेषण

सर्वेक्षण में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित 10 प्रश्न शामिल थे। नीचे इन प्रश्नों के उत्तरों का सारांश दिया गया है।

सवाल	**दृढ़तापूर्वक सहमत**	**सहमत**	**तटस्थ**	**असहमत**	**दृढ़तापूर्वक असहमत**
1. **मेरे पास वित्तीय संसाधनों तक पहुंच है।**	35%	40%	15%	5%	5%
2. **शिक्षा ने मेरे जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है।**	60%	30%	5%	3%	2%
3. **मैं निर्णय लेने में सक्षम महसूस करता हूँ।**	50%	30%	15%	5%	0%
4. **मेरे लिए स्वास्थ्य सेवाएँ पर्याप्त हैं।**	40%	35%	15%	5%	5%
5. **मैं राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हूं।**	10%	20%	50%	10%	10%
6. **मैं स्वयं सहायता समूहों में भाग लेता हूँ।**	45%	35%	10%	5%	5%
7. **मेरा परिवार मेरी आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करता है।**	65%	25%	5%	3%	2%
8. **मुझे पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध है।**	50%	40%	5%	3%	2%
9. **मुझे अपनी आय पर नियंत्रण है।**	40%	45%	10%	3%	2%
10. **मैं अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त हूं।**	55%	35%	5%	3%	2%

यह तालिका महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं को मापने के उद्देश्य से 10 प्रश्नों के उत्तरों का सारांश प्रस्तुत करती है। उत्तरों को पाँच स्तरों में वर्गीकृत किया गया है: दृढ़ता से सहमत, सहमत, तटस्थ, असहमत और दृढ़ता से असहमत। प्रत्येक प्रश्न

सशक्तिकरण के एक अलग पहलू को संबोधित करता है, जिसमें आर्थिक पहुँच, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक भागीदारी और राजनीतिक जुड़ाव शामिल है।

वित्तीय संसाधनों तक पहुंच (प्रश्न 1):

''मेरे पास वित्तीय संसाधनों तक पहुँच है'' प्रश्न के उत्तर में 35 प्रतिशत महिलाएँ दृढ़ता से सहमत थीं, और 40 प्रतिशत सहमत थीं, जबकि केवल 10 प्रतिशत असहमत थीं या दृढ़ता से असहमत थीं। इससे पता चलता है कि अध्ययन में महिलाओं का एक महत्वपूर्ण अनुपात महसूस करता है कि उनके पास वित्तीय संसाधनों तक पहुँच है, जो उनके सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण कारक है। वित्तीय संसाधनों तक पहुँच महिलाओं को स्वतंत्र आर्थिक निर्णय लेने, अपने स्वयं के व्यवसायों में निवेश करने और अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने की अनुमति देती है। असहमत होने वाले 10 प्रतिशत को ऋण, बैंकिंग सेवाओं या भेदभावपूर्ण प्रथाओं तक सीमित पहुँच जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

जीवन की गुणवत्ता पर शिक्षा का प्रभाव (प्रश्न 2):

''शिक्षा ने मेरे जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है'' कथन पर 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की, जबकि 30 प्रतिशत ने सहमति व्यक्त की। केवल एक छोटा प्रतिशत (5 प्रतिशत) तटस्थ या असहमत था। यह परिणाम महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने में शिक्षा की भूमिका को दृढ़ता से उजागर करता है, उन्हें कौशल और ज्ञान प्रदान करता है जो उनके रोजगार की संभावनाओं, स्वास्थ्य जागरूकता और नागरिक जीवन में भागीदारी को बढ़ाता है। शिक्षा महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तीकरण के लिए एक आधार के रूप में कार्य करती है।

निर्णय लेने की शक्ति (प्रश्न 3):

निर्णय लेने के मामले में, 50 प्रतिशत महिलाओं ने बताया कि वे निर्णय लेने में सशक्त महसूस करती हैं, और 30 प्रतिशत सहमत थीं। केवल 5 प्रतिशत असहमत थीं या दृढ़ता से असहमत थीं, जो दर्शाता है कि काफी संख्या में महिलाओं के पास अपने जीवन में निर्णयों पर कुछ हद तक नियंत्रण है। निर्णय लेने की शक्ति सशक्तिकरण का एक प्रमुख संकेतक है, जो बताता है कि इन महिलाओं को अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक मामलों में एक निश्चित सीमा तक स्वायत्तता प्राप्त है।

स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच (प्रश्न 4 और प्रश्न 8):

स्वास्थ्य सेवा की पर्याप्तता के बारे में, 40 प्रतिशत महिलाओं ने सहमति व्यक्त की कि स्वास्थ्य सेवाएँ उनके लिए पर्याप्त हैं, जबकि 35 प्रतिशत ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की। हालाँकि, एक छोटा प्रतिशत (5 प्रतिशत) असहमत था। यह दर्शाता है कि जबकि अधिकांश महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच अपेक्षाकृत अच्छी है, फिर भी इसकी पर्याप्तता के बारे में चिंताएँ हैं। जब पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा पहुँच के बारे में पूछा गया, तो 50 प्रतिशत सहमत थे, और 40 प्रतिशत दृढ़ता से सहमत थे, यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवा प्रणाली कुछ हद तक सुलभ है, लेकिन गुणवत्ता और उपलब्धता के मुद्दे बने रह सकते हैं, खासकर कम सेवा वाले क्षेत्रों में।

राजनीतिक भागीदारी (प्रश्न 5):

उत्तरदाताओं में राजनीतिक भागीदारी कम है, केवल 10 प्रतिशत ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की कि वे राजनीतिक गतिविधियों में शामिल हैं और 20 प्रतिशत सहमत हैं। महत्वपूर्ण 50 प्रतिशत तटस्थ थे, और 20 प्रतिशत असहमत थे या दृढ़ता से असहमत थे। इससे पता चलता है कि जबकि कई महिलाएं राजनीतिक मुद्दों के बारे में जागरूक हो सकती हैं, राजनीतिक गतिविधियों में उनकी वास्तविक भागीदारी सीमित है। राजनीतिक भागीदारी में बाधाओं में सामाजिक मानदंड, प्रोत्साहन की कमी या सूचना तक सीमित पहुंच शामिल हो सकती है।

स्वयं सहायता समूह (प्रश्न 6):

महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा (45 प्रतिशत) स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में भाग लेता है, जबकि 35 प्रतिशत सहमत हैं, और केवल 5 प्रतिशत दृढ़ता से असहमत हैं। स्वयं सहायता समूहों ने वित्तीय स्वतंत्रता, कौशल विकास और नेतृत्व के अवसरों के लिए मंच प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये परिणाम सशक्तिकरण प्रक्रिया में एसएचजी के महत्व को उजागर करते हैं, खासकर अर्ध–शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में।

आर्थिक गतिविधियों के लिए परिवार का समर्थन (प्रश्न 7):

पारिवारिक समर्थन के बारे में, 65 प्रतिशत महिलाएँ इस बात से पूरी तरह सहमत थीं कि उनके परिवार उनकी आर्थिक गतिविधियों का समर्थन करते हैं, और 25 प्रतिशत सहमत थीं। यह समर्थन महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रतिरोध या कलंक का सामना किए बिना आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता को सीधे प्रभावित करता है। पारिवारिक समर्थन से अक्सर आत्मविश्वास बढ़ता है, संसाधनों तक पहुँच बढ़ती है और उद्यमशीलता के अवसर बढ़ते हैं।

भविष्य में विश्वास (प्रश्न 10):

भविष्य के बारे में आत्मविश्वास के सवाल पर, 55 प्रतिशत महिलाओं ने दृढ़ता से सहमति व्यक्त की, और 35 प्रतिशत सहमत थीं। यह उनके भविष्य की संभावनाओं पर सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है, जो सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक पहलू है। जो महिलाएं अपने भविष्य के बारे में आश्वस्त महसूस करती हैं, वे शिक्षा, करियर विकास और व्यक्तिगत विकास को आगे बढ़ाने की अधिक संभावना रखती हैं।

4.3 परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 9:

एच□: शिक्षा के स्तर के आधार पर महिला सशक्तिकरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

एच□: शिक्षा के स्तर के आधार पर महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण अंतर है।

परिकल्पना 1 के लिए एनोवा तालिका:

स्रोत	वर्गों का योग	डीएफ	वर्ग मतलब	एफ मूल्य	पी-मूल्य
समूहों के बीच	25.00	3	8.33	4.50	0.01
समूहों के भीतर	50.00	146	0.34		
कुल	75.00	149			

एनोवा परीक्षण (तालिका 1) यह आकलन करता है कि क्या विभिन्न शिक्षा स्तरों में महिला सशक्तिकरण के स्तरों में कोई महत्वपूर्ण अंतर है। 0.01 का पी–मान दर्शाता है कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है, जिसका अर्थ है कि उच्च शिक्षा स्तर वाली महिलाएँ उच्च सशक्तिकरण का अनुभव करती हैं। समूह के बीच का अंतर समूह के भीतर के अंतर से कहीं अधिक बड़ा है, जो दर्शाता है कि शिक्षा महिला सशक्तिकरण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

परिकल्पना 2:

एच□: शिक्षा स्तर और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी के बीच कोई संबंध नहीं है।

एच□: शिक्षा स्तर और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी के बीच संबंध है।

परिकल्पना 2 के लिए काई–स्क्वायर परीक्षण तालिका:

शिक्षा का स्तर	स्वयं सहायता समूहों में भाग लेता है	स्वयं सहायता समूहों में भाग नहीं लेता	कुल
प्राथमिक शिक्षा	15	15	30

माध्यमिक शिक्षा	20	20	40
उच्च शिक्षा	40	20	60
कुल	75	55	150

ची–स्क्वायर परीक्षण के परिणाम 0.064 के पी–वैल्यू के साथ 5.49 का मान दिखाते हैं, जो दर्शाता है कि शिक्षा के स्तर और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी के बीच संबंध 5 प्रतिशत के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। जबकि डेटा से पता चलता है कि उच्च शिक्षा स्तर वाली महिलाओं के एसएचजी में भाग लेने की अधिक संभावना है, यह संबंध इतना मजबूत नहीं है कि इसे निर्णायक माना जा सके। सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव जैसे अन्य कारक एसएचजी भागीदारी में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

''ची–स्क्वायर मान

'' = 5.49 (पी–मान = 0.064) कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं दर्शाता है।

5. चर्चा

इस अध्ययन के निष्कर्ष दिल्ली एनसीआर में महिला सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले सामाजिक–आर्थिक कारकों की व्यापक समझ प्रदान करते हैं। यह स्पष्ट है कि शिक्षा सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है। उच्च शिक्षा स्तर वाली महिलाओं ने निर्णय लेने में अधिक स्वायत्तता, बेहतर स्वास्थ्य सेवा पहुँच और अधिक पर्याप्त आर्थिक भागीदारी की सूचना दी, जो महिला सशक्तिकरण में शिक्षा के महत्व पर मौजूदा साहित्य के साथ संरेखित है (कालाकोटी, 2021)। इसी तरह, स्वयं सहायता समूह वित्तीय स्वतंत्रता और कौशल विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग के रूप में उभरे। इन समूहों की महिलाओं ने बेहतर आर्थिक परिणामों की सूचना दी, जो मुखिया (2016) के निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं, जिन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने में एसएचजी की भूमिका पर ध्यान दिया। हालाँकि, कुछ बाधाएँ बनी हुई हैं। स्वास्थ्य सेवा पहुँच, अपेक्षाकृत अच्छी होने के बावजूद, अभी भी एक चिंता का विषय है, विशेष रूप से ग्रामीण या कम सेवा

वाले क्षेत्रों में, जो ब्रेन्या (2018) के निष्कर्षों को प्रतिध्वनित करता है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक भागीदारी उल्लेखनीय रूप से कम थी, जो राजनीतिक स्थानों में महिलाओं के लिए अधिक सामाजिक और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता का सुझाव देती है। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं के लिए समग्र सशक्तिकरण हासिल करने के लिए इन चुनौतियों, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा और राजनीतिक भागीदारी में, का समाधान किया जाना चाहिए। यह अध्ययन नीति–निर्माण के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों पर जोर दिया जाता है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं का उत्थान कर सकते हैं।

6. निष्कर्ष

यह अध्ययन दिल्ली एनसीआर क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने में सामाजिक–आर्थिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है, विशेष रूप से रोजगार के अवसरों, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमताओं के संदर्भ में। शिक्षा के उच्च स्तर उच्च सशक्तिकरण से जुड़े हैं, जैसा कि एनोवा परीक्षण से सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण निष्कर्षों से स्पष्ट है। इसके अतिरिक्त, सूक्ष्म उद्यमिता और स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी वित्तीय स्वतंत्रता और नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देकर महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इन सकारात्मक विकासों के बावजूद, पूर्ण सशक्तिकरण के लिए कई बाधाएँ बनी हुई हैं। सर्वेक्षण के जवाबों से पता चला है कि गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुँच कई महिलाओं के लिए एक चुनौती बनी हुई है। क्षेत्र में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी भी अपेक्षाकृत कम है, जो दर्शाता है कि सामाजिक मानदंड और प्रोत्साहन की कमी महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं।

दिल्ली एनसीआर जैसी शहरी सेटिंग्स में महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने के लिए, नीति निर्माताओं को शैक्षिक अवसरों में सुधार, बेहतर स्वास्थ्य सेवा पहुँच सुनिश्चित करने और अधिक से अधिक राजनीतिक और सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक रूप से समृद्ध होने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना इस क्षेत्र में लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए आवश्यक होगा। भविष्य के शोध में विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तरों पर महिला सशक्तिकरण पर इन हस्तक्षेपों के दीर्घकालिक प्रभावों का पता लगाना चाहिए।

संदर्भ

- वीरमणि, पी., सेल्वाराजू, डी., और अजितकुमार, डीजे (2009)। ''माइक्रो एंटरप्रेन्योरशिप के माध्यम से महिला सशक्तिकरण'' – एक समाजशास्त्रीय समीक्षा। जर्नल ऑफ एशिया एंटरप्रेन्योरशिप एंड सस्टेनेबिलिटी, 5(2), 83।
- कलाकोटी, एस.आर. (2021)। शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण–एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशनल रिसर्च, 10, 8(6), 1–8।
- ब्रेनयाह, जे.के. (2018)। सशक्तिकरण गतिशीलता और सामाजिक–आर्थिक विकासः विकासशील समाजों में महिलाओं के लिए प्रासंगिकता। समाजशास्त्र और नृविज्ञान, 6(7), 563–570।
- हिरेमथ, एस.एस. (2021)। 21वीं सदी में महिला सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य। ब्लू डायमंड पब्लिशिंग।

- बुखारी, एम., खुश्क, जी.एम., खोसो, के., और शाह, एस. (2023)। सिंध की ग्रामीण महिलाओं में सशक्तिकरण का स्तरः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। पाकिस्तान जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर, एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग एंड वेटरनरी साइंसेज, 39(2), 133–140।
- बयांगनी, बी., इरांदूस्त, एस.एफ., और अहमदी, एस. (2014)। ईरान के सनांदाज शहर में महिला घरेलू मुखिया को सशक्त बनाने पर प्रभावी सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। एशियन जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल स्टडीज, 2(3)।
- मुखिया, आर. (2016). सिक्किम में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, सिक्किम विश्वविद्यालय)।
- नसीर, शाजिया (2016)। स्वास्थ्य और सशक्तिकरणः अलीगढ़ शहर में महिलाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, भारत के समाजशास्त्र विभाग को प्रस्तुत एक पीएच.डी. थीसिस।
- फर्जीजादेह, जेड., मोटावसेली, एम., और तालेब, एम. (2013)। ग्रामीण महिला समाज में सशक्तिकरण (आर्थिक और सामाजिक), मूल समझ, इसके विकास को प्रभावित करने वाले कारक और बाधाओं का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। सामुदायिक विकास (ग्रामीण और शहरी), 5(1), 1–40।
- अरुल परमानंदम, डी., और पैकिरिसामी, पी. (2015)। महिला सशक्तिकरण पर सूक्ष्म उद्यमों के प्रभाव पर एक अनुभवजन्य अध्ययन। जर्नल ऑफ एंटरप्राइजिंग कम्युनिटीजः पीपल एंड प्लेसेस इन द ग्लोबल इकोनॉमी, 9(4), 298–314।
- डे, एल., और दास, एन. (2020)। महिला सशक्तिकरण और राजनीतिक भागीदारीः पश्चिम बंगाल, भारत में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिटिकल अकाउंटिंग, 11(5), 417–428।

- यूसुफ, पी., और वानी, एनए (2016)। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिकाः ग्वालियर शहर, मध्य प्रदेश, भारत की महिला प्रोफेसरों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 2(1), 774–6।
- सुब्रमणि, एस. (2022). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड स्पेशल एजुकेशन, 14(5).
- मुरुगेसन, टी., और सिंगाराम, आई. (2016)। स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के लिए महिला सशक्तिकरण पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। 2 महिलाएँ और सामाजिक परिवर्तन, 442।
- सुकुमारन, एन., और लिंगागनेसन, सी. (2024) स्थानीय स्वशासन और महिला सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण। लघु, 155, 51–66।
- वासन, ए.ए., और आगा, एन. (2010)। महिला सशक्तिकरणः घरों में महिलाओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज, 38(38), 123।
- भंडारी, एम.पी. (2024)। सामाजिक विज्ञान में नारीवाद। महिलाओं और समाज में। इंटेकओपन।
- लियू, सी.डब्लू., सलदान्हा, टी.जे., और मिथास, एस. (2024)। क्या डिजिटल कौशल वंचित जातियों और महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं? भारत से साक्ष्य। उत्पादन और संचालन प्रबंधन, 10591478241248749।

- लियू, सी.डब्लू., सलदान्हा, टी.जे., और मिथास, एस. (2024)। क्या डिजिटल कौशल वंचित जातियों और महिलाओं को सशक्त बना सकते हैं? भारत से साक्ष्य। उत्पादन और संचालन प्रबंधन, 10591478241248749।

- महतो, टी., झा, एम.के., नायक, ए.के., और कौशल, एन. (2023)। स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरणः एक ग्रंथसूची विश्लेषण और व्यवस्थित समीक्षा। जर्नल ऑफ एंटरप्राइजिंग कम्युनिटीजः पीपल एंड प्लेसेस इन द ग्लोबल इकोनॉमी, 17(6), 1511–1538।
- जयसावल, एन., और साहा, एस. (2023)। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, 9(4), 08–13।
- बालाबंतराय, एस.आर., मिश्रा, एम., और पानी, यू. (2023)। भारत में महिलाओं के खिलाफ साइबर अपराधों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययनः कारणों को समझना और पीड़ितों पर प्रभाव का मूल्यांकन करना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एशिया–पैसिफिक स्टडीज, 19(1)।